Peer Reviewed/ Refereed Journal

ISSN -PRINT-2231-3613ONLINE2455-8729
International Educational Journal
CHETANA
Impact Factor SJIF=4.157

Received on 8th Oct. 2018, Revised on 10th Oct. 2018; Accepted18thOct. 2018

आलेख

# हाशिये पर रह रहे समाज के आर्थिक–सामाजिक उत्थान में शिक्षा की भूमिका

*डा.डी.पी.सिंह
प्राचार्य, श्रीमती रामादेवी महिला महाविद्यालय
सीएमडी, रेडियो कमलवाणी 90.4 एफएम
कमलनिष्ठा संस्थान, कोलसिया (झुन्झुनू) राजस्थान
Email-drdp91@gmail.com, Mobile–9001005900,9413366451
Website –www.kamalnishtha.org, Google App –Kamalvani

*मुख्य शब्द :*हाशियाबंदी, आर्थिक–सामाजिक उत्थान, चक्रव्यूह आदि।

वर्तमान संदर्भ में ''**हाशिये पर रह रहे समाज के आर्थिक–सामाजिक उत्थान में शिक्षा की भूमिका**'' हम प्रत्येक के लिए अति–महत्व का विषय है। यह हम हर–एक के जीवन से कमोबेश जुड़ा हुआ यह विषय है।

हमें सर्वप्रथम यह जानना आवश्यक है कि आखिर यह हाशियाबंदी है क्या? यहां हमारे पास से ही इंदिरा गांधी कैनाल यानि कि राजस्थान कैनाल बह रही है। पंजाब के हरिके बैराज से निकलकर गंगानगर–हनुमानगढ़ तक प्रायः पानी की पूर्ति के लिहाज से लोगों की संतुष्टि का स्तर सामान्य या उससे ऊपर ही है, किन्तु जैसे–जैसे टेल की तरफ बढ़ते जाते है, अभाव बढ़ते जाते है, कठिनाईयां, अभाव, बंदिशें बढ़ती जाती है। पानी पर भी पुलिस के पहरे बैठा दिये जाते है। कमोबेश इसी स्थिति को हाशिये पर होना माना जा सकता है।

समाज की मुख्यधारा से दूर होते जाना ही हाशियाबंदी है। हाशियेदारी एक जीवन जीने की स्थिति है, जो कि करोड़ों लोगों को दुनियांभर में प्रभावित कर रही है। हाशिये पर जीने वाले लोगों का अपने जीवन तथा उसके लिए आवश्यक संसाधनों पर स्वयं का नियंत्रण निम्न स्तरीय होता है अर्थात् कोई और उन पर राज करता है तथा जैसा चाहे वैसे ही रहना होता है। यह स्थिति उन्हें समाज में कमाया हुआ अपना हक लेने से रोकती है। उन्हें इस तरह के चक्रव्यूह में बांध दिया जाता है, जो कि उसे अपना जीवन जीने से रोकती है तथा उन्हें समूह में ऐकान्त की और धकेल देती है। इस तरह की स्थिति मानव के विकास तथा संपूर्ण विश्व के विकास को बाधित करती है।

हाशियाबंदी एक सामाजिक प्रक्रिया है, जो कि प्रत्येक व्यक्ति, समुदाय एवं सामाजिक स्तर पर दिखाई देती है। इस हाशियाबंदी को ना तो संख्यात्मक गणना में लिया जा सकता है, ना ही कोई विशेष विवरणात्मक। बल्कि यह एक ऐसी स्थिति समाज द्वारा उत्पन्न की जाती है, जिससे व्यक्ति, समूह उसका शिकार हो जाता है। उसे समाज की मुख्यधारा से अलग–थलग करके सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक उन्नति के असमान अवसर प्रदान किये जाते है, जिससे उसका पिछड़ना सुनिश्चित है।

प्रायः देखा गया है कि समाज का उच्च वर्ग, चाहे वो शासनसत्ता में उच्च हो, चाहे धन में उच्च हो, चाहे जाति में या अन्य किसी भी दृष्टिकोण में स्वयं को उच्च मानता हो, वह अपनी उच्चता बनाये रखने के लिये इस हाशियाबंदी के हथियार को काम में लेता है। इस हेतु शक्ति स्वयं के पास होने का नाजायज फायदा उठाकर अधिसंख्य समाज को अज्ञानता, आडंम्बर, दिखावा, रूढ़िता, जाति, वर्ग, वर्ण आदि रूपी राक्षसों के सुपुर्द कर देता है, जो कि उसे पिछड़ेपन के समन्दर की गहराईयों में डूबोकर मजबूर स्थिति में रहने को बाध्य कर देते है।

यही कारण रहा कि भारत की आजादी के समय राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी के सामने डा. भीमराव अम्बेडकर ने इसी हाशियाबंदी को तोड़ने की बड़ी चुनौती सामने रखी और कहा कि भारत को अंग्रेजी दासता से मुक्ति के साथ ही सामाजिक–आर्थिक मुक्ति भी उतना ही महत्वपूर्ण विषय बन गया तथा स्वतंत्रता की जंग की भांति ही एक और जंग का ऐलान सामने आ गया। इस हाशियाबंदी

में सबसे बड़ी भूमिका जाति व्यवस्था की रही है, जो आज भी है। इसी कारण डा. अम्बेडकर जी ने कहा कि तब तक देश जातिविहीन नहीं बनेगा, तब तक देश लोकतांत्रिक नहीं बनेगा। महात्मा गांधी जी ने विषय की गंभीरता एवं आवश्यकता को जानकर ही 1934–35 में कहा था कि इस जाति समस्या का हल हिन्दुस्तानी तथाकथित सवर्ण समाज को ढूंढ़ना चाहिए, ये हमारा कर्तव्य है।

अन्ततः यह जिम्मेदारी बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर को ही सौंपी गयी तथा संविधान निर्मात्री समिति अध्यक्ष बनाया गया। गांधीजी एवं कांग्रेस का देश की आजादी में बड़ा योगदान है किन्तु डा. अम्बेडकर का ठोस योगदान ''सामाजिक समानता का सिद्धान्त'' है। इसी से ही सामाजिक न्याय की शुरूआत होती है तथा हाशिये पर जीवनयापन करने वाले लोगों को मुख्यधारा में लाने का प्रयास जारी हुआ। इस कार्य के लिए अवसरों की समान एवं आरक्षित व्यवस्था को शुरू किया गया।

इस नव–अभियान के आगाज का आधार शिक्षा को बनाया गया तथा प्रवेश आदि में अवसर समानता के सिद्धान्त को लागु किया गया, जो कि जरूरी भी था।

देखा जाये तो कोई भी व्यक्ति का जैविक स्वरूप उसके माता–पिता के कारण होता है, किन्तु बौद्धिक स्वरूप शिक्षा तथा गुरूजनों के कारण होता है, इसी कारण उसे गुरू का मानस पुत्र–पुत्री माना जाता है। शिक्षा के ही कारण आज हम सब उस युगों पुरानी हाशियाबंदी को तोड़कर यहां तक पहूंचे है। शिक्षा एक व्यक्ति के व्यक्तित्व के निर्माण की प्रक्रिया है। निसंदेह, इससे हमारे अन्दर एक आत्मस्वाभिमान का भाव जागृत हुआ है तथा हम अपनी क्षमताओं को पहचानकर उन पर अपना अधिकार समझने लगे है। जिन क्षमताओं का मौल कोई वसूल कर लेता था, उनका मौल स्वयं लेना सीख गये है।

शिक्षा की जिस सतही प्रक्रिया से आप और हम सब निकलकर आये हैं, उसके लिए मेरा अनुभव है कि यह जीवन को सशक्त बनाती है, अपने भावों और क्षमताओं के सही प्रदर्शन प्रकट करने का तरीका बताती है तथा अपनी अन्तःचेतना को सामाजिक परिधि के अनुरूप उपयोग में लेना बताती है।

देश की आजादी के साथ ही सामाजिक समानता के लिये छिड़ी जंग में प्रत्येक स्तर पर शिक्षा की महत्ती भूमिका रही है और शिक्षा को इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये तैयार करने का प्रयास किया गया है। यह स्तर चाहे पाठ्यक्रम निर्माण को हो, विद्यालयी व्यवस्था में वातावरण प्रदान करने का हो अथवा कक्षा–शिक्षण के दौरान एवं सहायक गतिविधियों के आयोजन के समय का। आज हम देखते है कि पाठ्यपुस्तकों से विभेदीकरण की विषय–वस्तु को हटाकर सामाजिक समानता को प्रकट करने वाली विषयवस्तु को शामिल किया जा रहा है। हालांकि इसमें सबसे बड़ी भूमिका अध्यापक की है, जो कि विद्यार्थियों के सामने विषयवस्तु को परोसता है, विषयवस्तु को उदाहरण सहित व्याख्या देने का काम करता है।

पिछले वर्ष मुझे सामाजिक विज्ञान की एक कक्षा का अवलोकन करने का मौका मिला, जिसके माध्यम से मैंने यह देखने की कोशिश की कि एनसीएफ के उद्देश्य दरअसल कक्षा के धरातल पर क्या शक्ल ले रहे हैं। इसमें पढ़ाई गयी विषयवस्तु तथा दसे पढ़ाने की प्रक्रिया का विश्लेषण करके कुछ कारकों की पड़ताल की गई है।

पाठ का नाम है – ''सामाजिक न्याय और वंचित लोग'', जिसमें कई सारे खण्ड शामिल किये गये हैं, जिसमें से एक का जिक्र यहां करना चाहूँगा –

- अस्पृश्यता/अस्पृश्यता के विभिन्न प्रकार, मनुष्यों द्वारा हाथ से मैला साफ करना।

अस्पृश्यता का जिक्र करते हुए शिक्षिका ने मैला साफ करने की प्रथा की बात की। उसने कहा कि ''वे मानव मल को खुले हाथों से साफ करते हैं। उन्हें कोई नहीं छुना चाहता। यह अस्वस्थ्यकर भी होता है। जाति की बात छोड़िए, हम जाति–पाति नहीं मानते, पर तुम्हें लगता है कि तुम उन हाथों से पाने का पानी लेना चाहोगे जिन्होंने पाखाना साफ किया हो? किसका मन करेगा, पानी पीने का? कीटाणु हो सकते हैं। हम मानते है कि सभी लोग समान हैं, पर स्वास्थ्य अलग मुद्दा है। हॉ, अगर वे दस्ताने पहनकर टॉयलेट साफ करेंगे तो अलग बात है।''

यहॉ हम देख सकते है कि शिक्षिका यह कहती है कि अस्पृश्यता बुरी बात है पर फिर वह खुद ही उन धारणाओं को मजबूत कर रही है कि उन्हें नहीं छुआ जाना चाहिए। मैला प्रथाओं को प्रतिबंधित करने के लिए आवाज उठाने की बजाऐ मौजूदा धारणाओं के

पक्ष में तर्क दे दिया। दस्ताने उपलब्ध करवाने की किसकी जिम्मेदारी है? ऐसा क्यों है कि प्रतिबंधित होने के बावजूद हाथों से मैला उठाने की प्रथा अब भी जारी है? सरकार की क्या भूमिका है? क्या वे लोग सिर्फ कानून बनाने के लिये होते है? इन कानूनों का पालन करवाने की जिम्मेदारी किसकी है? आदि मुद्दों पर बहस करवाने की बजाये इन्हें छुआ तक नहीं। क्योंकि ऐसे मुद्दे संघर्ष की स्थिति पैदा करते हैऔर पाठ्यक्रम हमेशा इस तरह के संघर्ष से बचने की कोशिश करते है।

देश में हाशियाबंदी तोड़ने में सरकार, कानून, मीडिया, प्रशासन आदि सभी ने अतिमहत्वपूर्ण भूमिका निभायी है, किन्तु आज भी हमें इसे जड़मूल से समाप्त करने वाले स्रोत शिक्षा के स्वरूप तथा उसे लागु करने की प्रक्रिया पर निगाहेबान भी बनना होगा, तभी हम आने वाले समय में और अधिक समानता एवं सामाजिक न्याय प्राप्त समाज का निर्माण कर सकेंगे।

**** Corresponding Author:***
**डा.डी.पी.सिंह**
*प्राचार्य, श्रीमती रामादेवी महिला महाविद्यालय*
*सीएमडी, रेडियो कमलवाणी 90.4 एफएम*
*कमलनिष्ठा संस्थान, कोलसिया (झुन्झुनू) राजस्थान*
*Email-drdp91@gmail.com, Mobile–9001005900,9413366451*
*Website –www.kamalnishtha.org, Google App –Kamalvani*